रजिस्ट्री सं. डी. एल.-33004/99 REGD. NO. D. L.-33004/99

# भारत का राजपत्र
# The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY
भाग III—खण्ड 4
PART III—Section 4
प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 350] नई दिल्ली, शुक्रवार, दिसम्बर 28, 2001/पौष 7, 1923
No. 350] NEW DELHI, FRIDAY, DECEMBER 28, 2001/PAUSA 7, 1923

## केन्द्रीय होम्योपैथी परिषद्

## अधिसूचना

नई दिल्ली, 28 दिसम्बर, 2001

**सं. एफ. 12-5/2000-के.हो.प.**—केन्द्रीय होम्योपैथी परिषद, केन्द्रीय सरकार की पूर्व मंजूरी से होम्योपैथी केन्द्रीय परिषद अधिनियम, 1973 (1973 का 59वाँ) की धारा 33 के खण्ड (झ) (ञ) (ट) और धारा 20 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, होम्योपैथी (श्रेणीकृत डिग्री पाठ्यक्रम) विनियम, 1983 में संशोधन करने के लिए निम्नलिखित विनियम बनाती है, अर्थात् :—

1. संक्षिप्त नाम तथा प्रारम्भ :—

(1) इन विनियमों का संक्षिप्त नाम होम्योपैथी (श्रेणीकृत डिग्री पाठ्यक्रम) संशोधन विनियम, 2001 है।

(2) ये भारत के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से प्रवृत्त होंगे।

2. होम्योपैथी (श्रेणीकृत डिग्री पाठ्यक्रम) विनियम, 1983 (इसके पश्चात् मूल विनियम के नाम से उल्लेखित) मे, विनियम 5 के लिए, निम्नलिखित विनियम को प्रतिस्थापित किया जायेगा अर्थात् :—

"5 विषय :—बी.एच.एम.एस. (श्रेणीकृत डिग्री) पाठ्यक्रम के अध्ययन एवं परीक्षा के विषय निम्न होंगे :—

(1) होम्योपैथी औषधि साभ्यास, शिशु रोग अवरोधी तथा सामाजिक औषध, शल्यक्रिया प्रसूति एवं स्त्री रोग विज्ञान तथा क्रमिक विकृत विज्ञान सहित।

(2) होम्योपैथी औषध निघंटु (मेटिरिया मेडिका) अनुप्रयुक्त तथा शुद्ध (एप्लाइड एण्ड प्योर)

(3) आर्गेनन ऑफ मेडिसिन, होम्योपैथी दर्शन शास्त्र, पुरानी बिमारियॉं, तर्क तथा रेपर्टरीकरण

3. मूल विनियम के विनियम 6 के लिए निम्नलिखित विनियम को प्रतिस्थापित किया जायेगा, अर्थात :-

6 श्रेणीकृत डिग्री पाठ्यक्रम के लिए पाठ्य विवरण :- बी॰एच॰एम॰एस॰ (श्रेणीकृत डिग्री) पाठ्यक्रम हेतु निम्नलिखित पाठ्य विवरण होगा, अर्थात :-

**होम्योपैथी औषध का साभ्यास**:- होम्योपैथी का रोग के प्रति एक सुभिन्न दृष्टिकोण हैं । यह रोग की पहचान न तो प्रमुख लक्षणों से और न ही शरीर की किसी अंग या भाग के लक्षणों से करती हैं बल्कि यह रोगी का संपूर्ण रूप से तथा रोग के लक्षणों की सम्पूर्णता का उपचार करती हैं । इसलिए होम्योपैथी में सिर्फ रोगी के रोग के नाम का महत्व नहीं है । इसलिए श्रेणीकृत डिग्री पाठ्यक्रम में होम्योपैथी औषधि साभ्यास विषय शिशु रोग विज्ञान, अवरोधक तथा सामाजिक औषधि, शल्यक्रिया, प्रसूति एवं स्त्री रोग विज्ञान, तथा क्रामिक विकृति विज्ञान सहित, एकीकृत रूप में सम्मिलित किये गये है ।

आयुर्विज्ञान मूलतः एक व्यवहारिक विज्ञान है जिसमें रोगीवृत लेने के तरीके में क्रमिक रोग पहचान पर अधिक बल दिया जाता है जबकि होम्योपैथी में रोग निदान के अतिरिक्त संरचना, पसंद/नापसंद, ताप प्रतिक्रिया जिसमें मानसिक स्थिति (व्यवहार सहित) व्यक्तिगतता पर क्रमिक निदान, सहित पर अधिक बल दिया जाता है ! अतः होम्योपैथी साभ्यास अधिक व्यवहारिक हो जाता है । इसलिए रोगी की शैयया के निकट शिक्षण/प्रशिक्षण की अवधारणा को इस प्रकार के व्यवहारिक स्वरूप को छात्रो के मन में बिठाने के लिए, ताकि वे सही मायनों में होम्योपैथ बन सकें, शामिल किया गया है । होम्योपैथी औषधि साभ्यास का निम्नलिखि पाठ्य विवरण होगा :-

**सिद्धान्त तथा होम्योपैथी औषधि साभ्यास उपचारार्थ नुस्खा लिखने की प्रविधि एक क्रमिक परिचय का पाठय विवरण -**

परिचय निम्न रूप में 1 1/2 वर्ष के नैदानिक पाठयक्रम में होम्योपैथी चिकित्सीय अभ्यास के लिए निम्न अनुदेश देने चाहिए ।

(अ) सामान्य तथा क्रमिक विकृति विज्ञान का पाठ्यक्रम ।

(आ) अवरोधक तथा सामाजिक औषधि जिसमें संचारी रोग, इसके बचाव, पर्यायवरणीय औषधि तथा परिवार कल्याण शामिल हैं, का एक पाठ्यक्रम ।

(इ) शिशु रोग :- शिशु की वृद्धि और विकास के साथ शिशुओं की आम बिमारियों पर अधिक बल दिया जाना चाहिए ।

(ई) शल्य क्रिया:- रोग - स्थितियों में अधिकतर होम्योपैथी में आन्तरिक उपचार हेतु मान्य होती है । शल्य परिधियों के मामलो में होम्योपैथी का दायरा काफी अधिक है परन्तु यह औषधि का पूरक है । शल्य क्रिया का होम्योपैथी में निश्चित स्थान हैं तथा इसे अभिविन्यास के साथ ही सिखाया जाना चाहिए ।

इसलिए शल्य क्रिया सिद्धांत का पाठयक्रम होगा :-

(क) भौतिक चिकित्सा (फिजियोथिरेपी) सहित शल्यक्रिया प्रविधि में व्यवहारिक ज्ञान ।
(ख) लघु शल्य क्रिया में व्यवहारिक निर्देश ज्ञान ।
(ग) रेडियो धर्मिता पर संभाषण तथा व्यवहारिक प्रदर्शन ।
(घ) रतिज रोग ।
(ङ) अस्थि संबंधित रोग ।
(च) दंत रोग ।
(द) शिशुओं में शल्य रोग ।
(ज) तंत्रिका शल्य रोग ।
(झ) कान, नाक तथा गले संबंधित रोग ।
(ण) नेत्र विज्ञान ।

शल्य उपकरणों के प्रयोग तथा भौतिक चिकित्सा प्रविधियों पर संभाषण तथा व्यावहारिक प्रदर्शन ।

आयुर्विज्ञान की इन शाखाओं में स्पष्ट अनुदेश देने चाहिए ताकि सामान्य परिस्थितियों, उनकी पहचान तथा उनके होम्योपैथी इलाज हेतु आवश्यक जानकारी प्राप्त हो सकें ।

(ङ) प्रसूति एवं स्त्री रोग विज्ञान :- छात्रों को विशेष नैदानिक जाँच प्रविधियों, स्थानीय परिस्थितियों तथा रोग विभेदता जहाँ कि शल्य क्रिया या तो जीवन रक्षक प्रमाण या यांत्रिक व्याधाओं को हटाने के लिए आवश्यक हों, में तैयार किया जाना चाहिए । इस संदर्भ में होम्योपैथी, आर्युविज्ञान तथा शल्य क्रिया के बारे में समान व्यवहार रखती हैं ।

प्रसूति एवं स्त्री रोग, स्वास्थ्य के साथ नुस्खा लेखन प्रविधि के सिंद्धातों व अभ्यास के क्रमिक अनुदेश के लिए पाठयक्रम भी होना चाहिए । सम्पूर्ण अध्ययन के दौरान छात्रों को परिस्थितयों के महत्व के नैदानिक, अवरोध तथा प्रबंधन स्वास्थ्य की और निर्देशित किया जाना चाहिए, औषध की इस शाखा में आवश्यक ज्ञान तथा सामान्य परिस्थितियों, पहचान तथा उपचार के समानता प्राप्त करने हेतु निदेशित किया जाना चाहिए ।

उपरोक्त विषयों के अतिरिक्त नैदानिक औषधि, शरीर के विभिन्न रोगों, सामान्य चर्म रोग सहित अनुदेश दिये जाने चाहिए ।

(च) होम्योपैथिक मेटीरिया मेडिका

(अ) होम्योपैथिक मेटीरिया मेडिका :- होम्योपैथिक मेटीरिया मेडिका की रचना अन्य मेटीरिया मेडिकाओं की रचना से भिन्न है । होम्योपैथी का विचार है कि मानव शरीर के पृथक-पृथक अंगों या तन्त्रों पर अथवा पशु-शरीर पर या उसके भिन्न-भिन्न हिस्सों पर औषधि क्रिया का अध्ययन करना ऐसी क्रिया का जीवन प्रक्रिया पर प्रभाव के एक पक्ष का अध्ययन मात्र है । इससे हम औषधि-क्रिया का समग्र रूप में अध्ययन नहीं कर पाते हैं और परिणामत. वह रूप हमारे अध्ययन से छूट जाता है ।

(आ) औषधि क्रिया का आवश्यक और संपूर्ण ज्ञान तभी हो सकता है जब स्वास्थ्य शरीर पर मात्रात्मक (क्वालीटेटिव) स्नोपरिक औषधि का प्रयोग किया जाए । इसी पद्धति से हम व्यक्ति के संपूर्ण मन और शरीर से संबंधित बिखरे हुए आंकड़ों को समझ सकते है और ऐसे संपूर्ण मानव पर ही औषधि ज्ञान का प्रयोग किया जाना है ।

(इ) होम्योपैथी मेटीरिया मेडिका में ऐसी प्रत्येक औषधि से उत्पन्न लक्षणों का कार्य प्रदर्शी (स्कीमेटिक) व्यवस्था क्रम वर्णित होता है उसमें उनके निर्वचन या अंतर-संबंध के बारे में कोई सिद्धांत या स्पष्टीकरण नहीं दिया जाता हैं । प्रत्येक औषधि का संश्लिष्टात्मक, विश्लेषणात्मक और तुलनात्मक अध्ययन किया जाना चाहिए और उसके आधार पर होम्योपैथी का विद्यार्थी ऐसी औषधियों का पृथक-पृथक और समष्टि में अध्ययन करने और उपयुक्त नुस्खा लिखने में सफल हो सकेगा ।

(ई) सर्वप्रथम आम तौर से होने वाले रोगों पर अति सामान्य औषधियों और पोलीक्रैस्टों की चर्चा की जानी चाहिए जिससे विद्यार्थी नैदानिक (क्लीनिकल) कक्षा में या आउट-डोर ड्यूटी पर ऐसी औषधियों के प्रयोग से भी भली प्रकार से परिचित हो जाए । उसकी विस्तृत और गंभीरता पूर्वक व्याख्या की जानी चाहिए और इस संदर्भ में विद्यार्थियों को ऐसी औषधियों का तुलनात्मक और पारस्परिक संबंध भी स्पष्ट किया जाना चाहिए । विद्यार्थी को औषधियों के प्रभाव-क्षेत्र और सामूहिक संबंधों से पूर्णतः परिचित कराया जाना चाहिए ।

कम सामान्य और असाधारण औषधियों की मात्र रूपरेखा बताकर उनके केवल विशिष्ट गुणों और लक्षणों के स्पष्टीकरण पर ही जोर दिया जाना चाहिए । तत्पश्चात ही असाधारण औषधियों का अध्ययन कराया जाना चाहिए ।

(उ) टयूटोरियल अवश्य होने चाहिए जिससे कि एक छोटी संख्या में विद्यार्थी अध्यापक के निकट संपर्क में आ सकें और रोगी के उपचार के सम्बन्ध में मेटीरिया मेडिका के प्रयोग का अध्ययन कर सकें तथा उसे समझ सकें ।

(ऊ) चिकित्सा शास्त्र पढाते समय विधार्थी का ध्यान मेटिरिया मेडिका की ओर आकर्षित किया जाना चाहिए जिससे कि रोग लक्षणों को देखते ही संबंधित औषधि की प्रूविगं से औषधि निश्चित की जा सके । विद्यार्थियों को इस प्रकार प्रोत्साहित किया जाना चाहिए कि वे रोगों में मेटिरिया मेडिका के व्यापक स्त्रोतों का उपयोग करें । विशिष्ट रोगों के लिए कुछ औषधियों मात्र को याद कर अपने ज्ञान को सीमित न करें । हैनिमैन के इस दृष्टिकोण से विद्यार्थी न केवल प्रकट होने वाले रोग लक्षणों को ही उचित रूप में समझ कर रूग्न अवस्था में उनके रोगहर मूल्य को जान सकेंगे अपितु औपचारिक परीक्षा सम्बन्धी उनका बोझ भी कम हो जाएगा ।

अन्यथा वर्तमान रूख जोकि रोगों के प्रति एलोपैथिक दृष्टिकोण की ओर झुका हुआ है, वह आर्गेनन के सिद्धान्तों के प्रतिकूल है ।

मेटीरिया मेडिका का प्रयोग आउट डोर और अस्पतालों के वार्डों में मौजूद रोगियों के संदर्भ में समझाया जाना चाहिए ।

तुलनात्मक मेटीरिया मेडिका और चिकित्साशास्त्र पर लेक्चर और टयूटोरियलों को यथा साध्य विभिन्न विभागों में नैदानिक आयुर्विज्ञान पर होने वाले लेक्चरों के साथ संबद्ध कर दिया जाना चाहिए ।

(ए) औषधियों के बारे में शिक्षण के लिए महाविद्यालय में हर्बेरियम शीट और अन्य स्पेसिमैन विद्यार्थियों को प्रदर्शित किए जाने चाहिए। लेक्चरों को आकर्षक बनाया जाना चाहिए और पौधों, तथा अन्य सामग्री के स्लाइड दर्शित करके सम्बन्धित पक्ष को स्पष्ट किया जाना चाहिए ।

(ऐ) (I) **प्रारम्भिक लेक्चर**:- होम्योपैथी मेटीरिया मेडिका के शिक्षण में निम्नलिखित विषयों को भी सम्मिलित किया जाना चाहिए, अर्थात् :-

(i) होम्योपैथी मेटीरिया मेडिका का स्वरूप और प्रविषय ।
(ii) होम्योपैथी मेटीरिया मेडिका के स्त्रोत ।
(iii) मेटीरिया मेडिका के अध्ययन के विभिन्न प्रकार ।

(II) औषधियों का अध्ययन निम्नलिखित शीर्षो के अधीन किया जाना चाहिए, अर्थात् :-

(i) सामान्य नाम, प्राकृतिक क्रम, आदतन, प्रयुक्त भाग, विधि ।
(ii) औषधि प्रूविंग के स्त्रोत ।
(iii) औषधियों का लाक्षणिक, चारित्रिक, लक्षण तथा वृति पर विशेष बल ।
(iv) औषधियों का तुलनात्मक अध्ययन ।
(v) सदृश विरोधी, प्रतिकारी और सुसंगत निदान ।
(vi) उपचारार्थ प्रयोग (अनुप्रयुक्त मेटीरिया मेडिका) ।

III— (इ) शूश्लर की बायोकोमिक चिकित्सा पद्धति के अनुसार 12 टिश्यू रेमेडीज का अध्ययन ।

बी एच एम एस (श्रेणीकृत डिग्री पाठ्यक्रम) में पढाये जाने वाली औषधियों की सूची परिशिष्ट के अनुसार होगी ।

(ए) **ऑर्गेनन और होम्योपैथी दर्शन के सिद्धान्त** :-

हैनिमेन का ऑगनन आफ मेडिसिन आयुर्विज्ञान दर्शन में एक महत्वपूर्ण कृति हे । यही संहिताबद्ध स्वरूप में, आर्युर्विज्ञान के क्षेत्र में एक मौलिक योगदान हैं । आर्गेनन के साथ ही होम्योपैथी का इतिहास तथा इसके संस्थापक की जीवनी का अध्ययन प्रदर्शित करेगा कि होम्योपैथी एक अनुप्रयुक्त उत्पाद है जिससे रोगी के उपचार और नैराश्य जैसी मानवीय समस्याओं का समाधान के लिए एक तर्क-परक तार्किक पद्धति द्वारा संभव है । अतः तर्क, योजक व घटात्मक मूलभूत सिद्धातों का गहन निस्तारीकरण आवश्यक है । तदानुसार आर्गेनन इस प्रकार से पढ़ाया जाना चाहिए कि विधार्थी को उस तर्क पूर्ण सिद्धांत की जटिलताएँ स्पष्ट हो जाएं जिस पर कि होम्योपैथी की आधारशिला रखी है जिसकी सहायता से होम्योपैथिक चिकित्सक को अपना दैनिक कार्य करने में सरलता और प्रत्येक रोगी का उपचार करने में सुविधा होगी ।

व्यवहारिक पक्ष को भी भली प्रकार समझ और याद कर लिया जाना चाहिए जिससे कि चिकित्सक के व्यवहारिक कार्य में वह मार्गदर्शक बन सकें

(1) प्रारंभिक लेक्चर (संभाषण) - 10 घण्टे ।

विषय :-

(अ) **होम्योपैथी क्या है ?**

यह नुस्खा प्रलेखन की एक विशेष विधि ही नहीं है,
अपितु यह आयुर्विज्ञान की पूर्ण पद्धति भी हैं जिसमें कि जीवन, स्वास्थ्य, रोग, उपचार तथा नैरोग्य की एक अलग अवधारणा हैं ! यह जीवन, स्वास्थ्य, रोग उपचार तथा नैरोग्य की होलिस्टिक, वैयक्तिक तथा गत्यात्मक अवधारणा है ! यह तार्किक तथा लक्ष्य आधारित अवधारणा है होम्योपैथी और कुछ नही बल्कि एक लक्ष्य पर तथा युक्तिसंगत औषधि पद्धति है होम्योपैथी अपने सिद्धांत और पद्धति से पूर्ण वैज्ञानिक है जो कि संप्रशित तथ्यों और आंकडों पर तथा संप्रेसित तथ्यों और आकंडों से संबंद्ध अपृथ्थकरणीय प्रेरक और वियोजक तर्क पर अधारित है ।

(आ) होम्योपैथी का सभी निदानपूर्व और परानैदानिक तथा नैदानिक विषयों के प्रति एक अलग दृष्टिकोण है ।

(इ) सभी परानैदानिक विषयों पर प्रारिम्भक विचार ।

(ई) हैनीमैन के आर्गेनन के पांचवे तथा छठे संस्करण सूत्र 1 से 294 तक ।

(उ) होम्ययोपैथी दर्शन :-

(1) होम्योपैथी दर्शन में केंट के संभाषण (लेक्चर)

(2) स्टुअर्ट क्लाज के होम्योपैथी दर्शन पर संभाषण (लेक्चर) एवं निबंध (दि जीनियस ऑफ होम्योपैथी)

(3) एच राबर्ट की कृति होम्योपैथी उपचार कला (आर्ट आफ क्योर बाई होम्योपैथी) !

(4) डनहम का उपचारार्थ विज्ञान (डनहमस साइन्स ऑफ थिरेप्यूटिक)

(ऊ) होम्योपैथी दर्शन में संभाषणों के दौरान निम्न मदों में प्रकाश डालना चाहिए:-

(1) होम्योपैथी का क्षेत्र

(2) होम्योपैथी के तर्क

(3) जीवन, स्वास्थ्य, रोग तथा अरूचि

(4) सुग्रहयता, प्रतिक्रिया तथा प्रतिरक्षा

(5) गम्भीर और चिरकालिक रोगों के होम्योपैथी सिद्धांत का सामान्य सिद्धान्त

(6) होम्योपैथी दवा खुराक

(7) शक्तिमतता, अल्पमतता और औषध शक्ति

(8) होम्योपैथी की दृष्टि से रोगी की जांच

(9) लक्षणों की समग्रता का नतीजा व महत्वता

(10) लक्षणों का मूल्य

(11) होम्योपैथी रोग वृद्धि

(12) उपचार प्रतिक्रिया देखने के पश्चात पूर्वानुमान

(13) द्वितीय नुस्खा

(14) कठिन और ठीक न होने वाले केस - पेलिएशन

(ए) आर्गेनन का परिचय (5वां तथा 6ठा संस्करण)

(ऐ) **होम्योपैथी औषधि का इतिहास** :- औषध जैसा कि यह हैनिमेन युग में उप्लब्ध थी, हैनीमेन का प्रारंभिक जीवन, प्रचलित पद्धति से उसकी निराशा, उसकी समानता के नियम की खोज, विभिन्न देशों में होम्योपैथी का प्रबंधन, होम्योपैथी के स्तंभ तथा उनका योगदान । होम्योपैथी का आज तक का विकास । होम्योपैथी के विकास की वर्तमान प्रकृति । होम्योपैथी का अन्य पद्धतियों पर प्रभाव ।

(ओ) हैनीमैन का चिरकालिक रोग

(औ) (क) सैद्धान्तिक भाग पर लेक्चर (सूत्र 1-70) विषयानुसार चर्चा :-

(i) चिकित्सक के लक्ष्य तथा उपचार के उच्चादर्श (सूत्र 1 और 2)
(ii) चिकित्सक का ज्ञान - सूत्र 3 और 4
(iii) रोग का ज्ञान जो मार्ग दर्शन करते हैं (सूत्र 5 से 19)
(iv) औषधियों का ज्ञान - सूत्र 19 से 21
(v) अन्य उपचार पद्धतियों से होम्योपैथी पद्धति का मूल्यांकन सूत्र 22 से 69
(vi) आरोग्य की तीन शर्तें - सारांश सूत्र - 70

(ख) आर्गेनन के प्रयोगात्मक भागों पर लेक्चरों को निम्नलिखित विषयों में विभाजित किया जाएगा और वह इन ही विषयों के बारे में दिए जाएगें :-

(क) किसी रोग को ठीक करने के लिए क्या जानना आवश्यक है और केस लेने की पद्धति - सूत्र 71 से 104
(ख) चिकित्सा की विकृतिजनक शक्ति, अर्थात, औषधि प्रूविंग या किस प्रकार औषधि ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है - सूत्र - 105 -145
(ग) सही औषधि कैसे निर्णीत की जाए सूत्र 147, 148, 149,150,153 और 155
(घ) ठीक खुराक - सूत्र 185, 186, 187, 189, 190, 191, 196,197, 199, 201, 202 और 203
(ङ) चिरकालिक रोग - सूत्र 204, 206 और 208
(च) मानसिक रोग - सूत्र 210-230
(छ) सविराम रोग - सूत्र 231, 232, 236, 237, 238, 240, 241, 242

(ज) भोजन, औषधि प्रयोग का क्रम और ढंग - सूत्र 245, 246, 247, 248, 252,253, 257, 259, 262, 263, 269, 270, 271, 273, 275, 276, 278, 280, 286, 289, 290 और 291 ।

(ग) अन्तरंग और बहिरंग दोनों विभागों के लिए नैदानिक लेक्चर । होम्योपैथी दृष्टिकोण से रोगी की परीक्षा :-

(क) रोग निर्धारण
(ख) रोग व्यक्तिकरण
(ग) लक्षण मूल्यांकन - लक्षण मूल्य
(ध) लक्षण श्रेणीकरण
(ड) औषधि का चयन, शक्ति और खुराक की पुनरावृति
(च) रोगवृद्धि या होम्योपैथी रोग वृद्धि
(छ) मियाजमेटिक निदान
(ज) द्वितीय नुस्खा
(झ) औषधि का प्रभाव देखने के बाद पूर्वानुमान
(घ) मनोविज्ञान

**सामान्य मनोविज्ञान की प्रस्तावना**

(क) विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान की परिभाषा और इसकी अन्य विज्ञानों से भिन्नता ।
(ख) मन संकल्पना ।
(ग) मैसमार और उसका सिद्धान्त, चेतना की सम्मोहन सरंचना, लिबिडे का विकास ।
(ध) फ्राड और उसका सिद्धांत-अचेतन की गतिशीलता ।
(ड) मनोविज्ञान की अन्य समकालीन विचार धाराएं ।
(च) स्वास्थ्य और रूग्णावस्था में मन और शरीर के बीच सम्बन्ध
(छ) प्रलक्षण (परसेप्रशन), कल्पना, विचारण और बुद्धि ।
(ज) संज्ञान/क्रियावृत्ति/भाववृत्ति/कोनेशन/सहजवृत्ति/भावुकता/व्यवहार ।
(झ) **होम्योपैथिक रेर्पटरी**:-

होम्योपैथी मेटेरिया मेडिका लक्षणों का विश्वकोष (एनसाइक्लों पिडिया) हैं । सभी को किसी भी मष्तिष्क के लिए अपने चारित्रिक श्रेणीनुसार याद रख पाना संभव नहीं हैं । रेपर्टरी एक सूची हैं , मेटेरिया मेडिका लक्षणों की फेहरिस्त हैं जिसे यथार्थ रूप से सूचीबद्ध किया गया है साथ ही संबंधित औषधियों की जानकारी दी गयी है जिससे इंगित व्याधि

का शीघ्र निदान संभव है । इस कोष की सहायता के बिना होम्योपैथी का अभ्यास संभव नहीं है, सर्वोतम कोष वह है जो कि संपूर्ण हैं ।

विभिन्न प्रकार तथा श्रेणी के रोगों और औषधियों में पारस्परिक संबंधों को प्राप्त करना कई प्रकार से संभव हो पाया है, तथा इसलिए अलग-अलग तरह के रेपर्टरियाँ उपलब्ध हैं, प्रत्येक का अपना (समान) सिमिलिमम ढूढ़ने का अपना अलग तरीका है !

रोगवृत्त (केस) दर्ज करना :-

रोग (केस) दर्ज करने की कठिनाइयाँ । रोग दर्ज करना तथा रोग दर्ज करने के लाभ ।

लक्षणों की सम्पूर्णता, लक्षण निदान, असामान्य, विशेष तथा चारित्रिक लक्षण, सामाान्य तथा विशेष लक्षण, लक्षण मुक्ति, रोग (केस) विश्लेषण, असामान्य व सामान्य लक्षण, लक्षणों का श्रेणीकरण तथा मूल्यांकन, मानसिक लक्षणों का महत्व, सामान्य लक्षणों के प्रकार तथा स्त्रोत :-

(अ) रेपर्टरीयों का इतिहास ।
(आ) रेपर्टरियों के प्रकार ।
(इ) बोनिगहसन पर किये गये तीन केस का प्रदर्शन ।
(ई) केंट रेपर्टरी - केस प्रर्दशन के साथ गहन अध्ययन ।
(उ) बोगर बोनिगहसन रेपर्टरी तथा उनका रेपर्टरी को योगदान ।
(ऊ) कार्ड रेपर्टरी, पॉच केस प्रदर्शन के साथ तथा कार्ड रेपर्टरी के लाभ, सैद्धान्तिक संभाषण प्रदर्शन सहित ।

प्रयोगिक :- छात्रों को रेपर्टराइज करना होगा :

(i) केन्ट के अनुसार 15 संक्षिप्त केस ।
(ii) 10 चिरकालिक (केन्ट पर विस्तृत केस) ।
(iii) 5 केस पुनरीक्षण करने हेतू ।

4 मूल विनियमों के विनियम 7 में :-

(i) उप-विनियम (i) को उप-विनियम (1) तथा;
(ii) उप-विनियम (ii) से (ix) को निम्न उप-विनियमों से प्रति-स्थापित किया जायेगा, अर्थात :-

(2) बी०एच०एम०एस०श्रेणीकृत डिग्री परीक्षा को दो भागों - भाग-I तथा भाग-II में विभाजित किया जायेगा ! भाग-I की परीक्षा छः महीने की समाप्ति पर तथा भाग-II की परीक्षा 18 माह की समाप्ति पर होगी ।

(3) अभ्यार्थियों को भाग-I के सभी विषय भाग -II की परीक्षा से कम से कम छः मास पूर्व पास करना आवश्यक होगा । परन्तु मूल विनियम के विनियम 7 के उप-विनियम (i)के खण्ड (क) तथा खण्ड (ख) के प्रावधानों (उपेबंधों ) के अनुसार बी०एच०एम०एस० श्रेणीकृत परीक्षा में बैठने वाले अभ्यार्थियों को विकल्प होगा कि वे 18 माह की समाप्ति के पश्चात भाग-I तथा भाग-II की परीक्षायें एक साथ दे सकें ।

(4) सभी तीन प्रमुख विषयों को भाग-I तथा भाग-II परीक्षाओं में विभाजित किया जायेगा ।

(5) परीक्षाओं में सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र तथा प्रयोगात्मक/ नैदानिक मौखिक परीक्षा सहित सम्मिलित होंगें !

(6) सभी होम्योपैथिक तथा संबंधित विषयों में 50% लिखित तथा 50% प्रयोगात्मक मौखिक सहित उत्तीर्णांक होंगें ।

(7) जिस अभ्यर्थी के सभी विषयों के मिलाकर अंक 75% या इससे अधिक होंगें तो उसे आनर्स के साथ उत्तीर्ण माना जाऐगा, बर्शते कि उसने परीक्षा प्रथम बार में ही उत्तीर्ण की हो ।

## भाग-I

(क) होम्योपैथी चिकित्सीय अभ्यास परीक्षा में दो लिखित प्रश्न पत्र और क्लीनिकल परीक्षा सहित एक मौखिक परीक्षा शामिल होंगे ।

लिखित प्रश्न पत्र -I में निम्न विषय होंगें :-

अवरोधी तथा सामाजिक आयुर्विज्ञान, सामान्य तथा क्रमिक विकृति विज्ञान सहित,

लिखित प्रश्न-पत्र -II परीक्षा दो अनुभागों में होगी :-

अनुभाग-1: शिशु रोग सहित प्रसूति एवं स्त्री रोग की क्लीनिकल विशेषतायें ।

अनुभाग-2: होम्योपैथी चिकित्सा शास्त्र

(ख) मेटिरिया मेडिका की परीक्षा में एक लिखित तथा एक प्रयोगात्मक परीक्षा होगी । लिखित प्रश्न पत्र दो अनुभागों में विभाजित होगा ।

अनुभाग-1: परिशिष्ट में औषधी सूची से औषधियां

अनुभाग-2: तुलनात्मक मेटिरिया मेडिका तथा अनुप्रयुक्त मेटिरिया मेडिका ।

(ग) आर्गेनन ऑफ मेडिसन में एक लिखित प्रश्न पत्र तथा एक प्रयोगात्मक मौखिक सहित परीक्षा होंगी ! लिखित परीक्षा में सूत्र 1-294, मनोविज्ञान और तर्क, रेपर्टरी तथा रोगवृत्त के प्रश्नों सहित होगें !

(8) प्रत्येक विषय में पूर्णांक तथा न्यून्तम उर्त्तीणांक निम्न होंगें

| क्र स | विषय | लिखित पूर्णांक | उर्त्तीणांक | मौखिक पूर्णांक | उर्त्तीणांक | कुल पूर्णांक | उर्त्तीणांक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | होम्योपैथी आयुर्विज्ञान अभ्यास (अवरोधी तथा सामाजिक आयुर्विज्ञान, विकृति विज्ञान तथा प्रसूति एवं स्त्री रोग विज्ञान तथा शिशु रोग विज्ञान सहित) | 200 | 100 | 100 | 50 | 300 | 150 |
| 2 | मेटिरिया मेडिका | 100 | 50 | 100 | 50 | 200 | 100 |
| 3 | आर्गेनन आफ मेडिसन,होम्योपैथी दर्शन मनोविज्ञान व तर्क सहित ! | 100 | 50 | 100 | 50 | 200 | 100 |

(9) प्रत्येक विषय के मौखिक सहित प्रयोगात्मक अंक निम्न प्रकार से विभाजित होंगें !

(क) होम्योपैथी औषध का अभ्यास :-

| | |
|---|---|
| समष्टिदर्शी तथा सूक्ष्मदर्शी नमूनों को खोजना | 40 अंक |
| स्त्री एवं प्रसूति रोग वृत्त केस प्रर्दशन | 25 अंक |
| मौखिक | 25 अंक |
| रोजनामाचा (जर्नल) | 10 अंक |

(ख) मेटेरिया मेडिका

| | |
|---|---|
| रोगवृत्त प्रदर्शन रिपोर्ट सहित | 50 अंक |
| मौखिक | 40 अंक |
| रोजनामाचा (जर्नल) | 10 अंक |

(ग) आर्गेनन ऑफ मेडिसिन

| | |
|---|---|
| रोगवृत्त प्रर्दशन विश्लेषण एवं मूल्यांकन सहित | 30 अंक |
| रेपर्टराइजेशन | 30 अंक |
| मौखिक | 30 अंक |
| रोजनामाचा (जर्नल) | 10 अंक |

## भाग- II

(क) होम्योपैथी आयुर्विज्ञान अभ्यास में परीक्षा के दो लिखित प्रश्न पत्र होंगें तथा एक प्रयोगात्मक/क्लीनिकल मौखिक सहित परीक्षा होगी । लिखित प्रश्न पत्र -I में निम्न दो अनुभागों का समावेश होगा :-

अनुभाग 1: आयुर्विज्ञान अभ्यास ।
अनुभाग 2: होम्योपैथी चिकित्सा - शास्त्र ।

लिखित परीक्षा -II में निम्न दो अनुभाग होंगे :-
अनुभाग 1: शल्य चिकित्सा, स्त्रीरोग, नाक, कान, गला, अस्थि रोग, दंत चिकित्सा सहित ।
अनुभाग 2: होम्योपैथी चिकित्सा - शास्त्र ।

(ख) मेटिरिया मेडिका परीक्षा में एक लिखित तथा एक प्रयोगात्मक परीक्षा होगी ।

लिखित परीक्षा के दो अनुभाग होंगें :–

अनुभाग 1:परिशिष्ट में औषध सूची से औषधियां
अनुभाग 2: तुलनात्मक मेटिरिया मेडिका तथा अनुप्रयुक्त (एपलाइड) मेटिरिया मेडिका ।

(ग) आर्गेनन ऑफ मेडिसन तथा होम्योपैथी दर्शन की परीक्षा में एक लिखित प्रश्न–पत्र तथा एक मौखिक शय्यागत क्लीनिकल परीक्षा होगी ! लिखित परीक्षा के निम्न दो अनुभाग होंगें ।

अनुभाग 1: होम्योपैथी दर्शन, होम्योपैथिक उपचार कला केन्ट, रार्बट, स्टूअर्ट क्लॉज तथा अन्य की संकल्पना के संदर्भ में ।

अनुभाग 2: रोंगों के विस्तृत मूलभूत कारण जैसे कि मियाजम, इसका सिद्धांत तथा इसकी तार्किक व्याख्या जैसा अभ्यास में प्रयुक्त हो ।

(10) प्रत्येक विषय के पूर्णांक तथा उत्तीर्णांक निम्न होंगें :–

| क्र स | विषय | लिखित पूर्णांक उत्तीर्णांक | | मैखिक प्रयोगात्मक सहित पूर्णांक उत्तीर्णांक | | कुल पूर्णांक उत्तीर्णांक | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | होम्योपैथी आयुर्विज्ञाान चिकित्सा अभ्यास शल्यक्रिया सहित(होम्योपैथी चिकित्सा शास्त्र के साथ) | 200 | 100 | 100 | 50 | 300 | 150 |
| 2 | मेटिरिया मेडिका | 100 | 50 | 100 | 50 | 200 | 100 |
| 3 | आर्गेनन आफ मेडिसिन, होम्योपैथी दर्शन ! | 100 | 50 | 100 | 50 | 200 | 100 |

(11) प्रत्येक विषय के प्रयोगात्मक सहित मौखिक परीक्षा के कुल अंकों को निम्न रूप में विभाजित किया जायेगा :-

| | |
|---|---|
| <u>होम्योपैथी आयुर्विज्ञान चिकित्सा अभ्यास</u> | 100 अंक |
| होम्योपैथी प्रबन्धन के साथ एक विस्तृत रोगवृत्त | 30 अंक |
| होम्योपैथी प्रबन्धन के साथ शल्य चिकित्सा का एक लघु रोग वृत्त | 20 अंक |
| एक्स-रे, यांत्रिक तथा नमूने सहित मौखिक | 50 अंक |
| <u>मेटिरिया मेडिका</u> | 100 अंक |
| होम्योपैथी उपचार के संदर्भ में रोगवृत्त प्रदर्शन | 50 अंक |
| मौखिक | 40 अंक |
| रोजनामांचा (जर्नल) | 10 अंक |

| | |
|---|---|
| आर्गेनन ऑफ मेडिसिन | 100 अंक |
| रोग निर्धारण के साथ रोगवृत्त प्रदर्शन, द्वितीय नुस्खा | 50 अंक |
| मौखिक | 50 अंक |

(12) यदि कोई अभ्यर्थी भाग-I तथा भाग-II की परीक्षायें एक साथ देता है तो इस स्थिति में भाग - II का परीक्षा परिणाम तब तक घोषित नहीं होंगा जब तक कि वह भाग-I की परीक्षा उत्तीर्ण कर ले !

5 मूल विनियमों के विनियम 8 में, निम्न विनियमों को प्रतिस्थापित किया जायेगा, अर्थात :-

8 परिणाम तथा परीक्षा में पुनः प्रवेश :-

(1) एक वर्ष में 4 से 6 माह के अन्तराल को रखते हुए दो से अधिक परीक्षायें नहीं ली जायेंगी ।

(2) सभी परीक्षायें सामान्यतः उस तारीख, स्थान, समय पर ली जायेगी जैसा कि परीक्षक मण्डल निर्धारित करेगा ।

(3) परीक्षा में प्रवेश के लिए प्रत्येक अभ्यर्थी परीक्षा प्रारम्भ की तारीख से कम से कम 21 दिन पूर्व संबंधित प्राधिकारी को, परीक्षा फीस सहित विहित प्रारूप में अपना आवेदन पत्र भेजेगा ।

(4) परीक्षक मण्डल परीक्षा के पश्चात यथा शीघ्र सफल अभ्यर्थियों की सूची जारी करेगा ।

(5) प्रत्येक अभ्यर्थी परीक्षा उत्तीर्ण कर लेने पर संबंधित परीक्षक मण्डल द्वारा निहित प्रारूप में एक प्रमाण पत्र प्राप्त करेगा ।

(6) यदि कोई अभ्यर्थी विहित चार मौको में सभी विषयों में उत्तीर्ण नहीं हो पाता है, जो उसे महाविधालय के प्रधान की सन्तुष्टी से सभी भागों के सभी विषयों में एक वर्ष का अतिरिक्त अध्ययन पाठ्यक्रम पूरा करना होगा तथा सभी बिषयों की परीक्षा देनी होगी ।

परन्तु बी०एच०एम०एस० परीक्षा भाग-II में बैठने वाले विद्यार्थी को विहित बारी के अंत में केवल एक विषय ही उत्तीर्ण करना हो तो उसे उस विशिष्ट विषय में आगामी परीक्षा में बैठने

की अनुज्ञा दे दी जायेगी और उसे यह परीक्षा इस विशेष बारी में पूरी करनी होगी ।

(7) परीक्षा मण्डल असाधारण परिस्थितयों में अपने द्वारा ली गयी किसी भी परीक्षा को पूर्णतः या आंशिक रूप से रद्द कर सकता है और केन्द्रीय होम्योपैथी परिषद को सूचित करेगा व उन विषयों में पुनः परीक्षा की व्यवस्था ऐसी कार्यवाही के तीस दिनों के अन्दर करेगा ।

(8) असाधारण परिस्थितयों में ही विद्यार्थियों को रियायती अंक दिये जा सकेंगे जिसे परीक्षण मण्डल एक आम सिद्धांत और माप-दंड के अनुसार समय समय पर निर्धारित करेगा !

डा. ललित वर्मा, रजिस्ट्रार-सह-सचिव

[विज्ञापन III/IV/147/2001/असा.]

**पाद टिप्पणी.** :—मूल विनियमों को भारत के आसाधरण राजपत्र, भाग-III, अनुभाग 4, में सं. 7-1/83-के.हो.प. दिनांक 11 मई, 1983 तथा तत्पश्चात् शुद्धि पत्र संख्या 7-1/83-के.हो.प. दिनांक 6 फरवरी, 1984 को प्रकाशित किया गया था।

## औषधि सूची

परिशिष्ठ

1. एबीज कैनेडेंसिस
2. एबीज नायेग्रा
3. एब्रोटेनम
4. एकेलिफा इंडिका
5. एसेटिक एसीडम
6. एकोनाइट नैप
7. एक्टिया रेसिमोसा
8. एक्टे स्पाइकटा
9. एथ्यूजा साइनैपियम
10. एस्क्युलस हिप्पोकास्टनम
11. एडोनिस वर्नेलिस
12. एड्रिनेलिन
13. एगारिकस मसकेरियस
14. एगानस कासटस
15. एलियम सिपा
16. एलोय सोक
17. एल्यूमिना
18. एमब्रा ग्रिसेआ
19. एमोनियम कार्ब
20. अमोनियम म्योर
21. एनाकार्डियम
22. एनथ्रासिनम
23. एंटिमोनियम आरसेनिकोसम
24. एंटीमोनियम क्रूडम
25. एंडिमोनियम टार्ट
26. एपोसिनम कैनेबिनम
27. एपिस मेल
28. एआरजेंट्म मेटेलिकम
29. आरजेंटम नाइट्रीकम
30. आर्निका मोंटाना
31. आरसैनिकम एलबम
32. आर्सेनिकम आयोडेटम
33. एरम ट्राइफिलम
34. आर्टेमिसिया वलगेरिस
35. एसाफोइटिडा
36. एअसटेरियास रबेन्स
37. औरम मेटेलिकम
38. एविना सेटिवा
39. बैसिलीनम
40. बेप्टीसिया
41. बेराइटा कार्बोनिकम
42. बेराइटा म्योर
43. ब्राइटा म्योर
44. बेलाडोना
45. बेल्लिस पेरेनिस
46. बेनजोइकम एसिडम
47. बरबेरिस वलगेरिस
48. बिसमथम
49. ब्लाट्टा ओरिनटेलिस
50. बोरेक्स
51. बोविस्टा
52. ब्रोमियम
53. ब्रायोनिया एल्बा
54. बुफेराना
55. कैक्टस ग्रॉडिफलौस
56. कैलेडियम
57. कैलकेरिया अर्स
58. कैलकेरिया कार्ब
59. कैलकेरिया फलोर
60. कैलकेरिया फास
61. कैलकेरिया सल्फ
62. कैलेन्डुला ऑफसिएनालिस
63. कैम्फोरा
64. कैनाबिस इंडिका
65. कैनाबिस सेटाइवा
66. कैनथोरिस
67. कैप्सीकम
68. कार्बोलिकम एसीडम
69. कार्बो वेज
70. कार्डस मैरिएनस
71. कार्सिनोसिन
72. कोलोफाइलम
73. कास्टिकम
74. सिअनानथस
75. सेडरोंम सिमारूबा फिरॉजिनिया
76. केमोमिल्ला
77. चेलिडोनियम मेज
78. चाइना ऑफिसिनालिस
79. चिनीयम आर्स
80. कॉलेस्टेरिनम
81. सिकुटा वाइरोसा
82. सिना
83. क्लीमेटिस इरेक्टा
84. कोका
85. कोक्कुलॅस इंडिका
86. कोफिया क्रूडा
87. कॉलचिकम
88. कोलिनसोनिया कैनाडेनसिस
89. कोलोसिंथिस
90. कॉड्यूरोंगो

91. कोनियम मैक
92. कोराल्लिम
93. करेटैगस ऑक्सी
94. क्रोकेस सेटिवा
95. क्रोटार्लस
96. क्रोटोन टिग
97. क्युपरम आर्स
98. क्युपरम मेटालिकम
99. साइक्लोमेन
100. डियोसकोरिया विलोसा
101. डिजिटेलिस
102. डिफ्थेरियम
103. डरोसेरा
104. डलकामारा
105. इक्वीसेटम
106. इरिजेरॅन
107. इयुपेटोरियम पर्फोलेटम
108. इयूफरेसिया ऑफिसिनेलिस
109. फेरम मेट्टालिकम
110. फेरम फास
111. फ्लारिक एसिडम
112. जैलसेमिएम
113. ग्लोनाइन
114. ग्राफाइटिस
115. हैमोमेलिस विर
116. हिपर सल्फ
117. हैल्लबोरस
118. हिलोनिएस
119. हाइड्रास्टिस
120. हाइड्रोकोटाइल एशियेटिका
121. हाइओसाइमस
122. इग्नेसिया आभरा
123. आयोडियम
124. इप्काकुनाह
125. काली काइक्रोमिकम
126. काली ब्रोमेटेम
127. काली कार्ब
128. काली म्यूरेटिकम
129. काली फॉस्फोरिकम
130. काली सल्फयूरिकम
131. काल्मिया
132. क्रेसोटम
133. लेक-कैनिनम
134. लेकेसिस
135. लीडम पाल
136. लिलियम टिगरीनम
137. लिथियुम कार्ब
138. लोबेलियाइनफ्लाटा
139. लाइकोपोडियम
140. लाइसिन
141. मैग्निसिया कार्बोनिका
142. मैग्निसिया म्युटियेटिया
143. मैग्निसिया फोस्फारिका
144. मेलेनड्रिनम
145. मेडोरहिनम
146. मेलीलोटस
147. माइनेआर्थस
148. मेफाइटिस
149. मरक्यूरियस क्रोसिवस
150. मरक्यूरियस साइनाटस
151. मरक्यूरियम डॅयूल्सिस
152. मरक्यूरियस सोलिलिसिस
153. मरक्यूरियस सल्फ
154. मेजेरियम
155. मिल्लिफोलियम
156. मोसकस
157. म्यूरेक्स
158. म्यूरिएटिक एसिडम
159. नाजा ट्रीफुडियस
160. नेट्रम कार्ब

| | |
|---|---|
| 161. नैट्रम मूरिएटकम | 162. नैट्रम फॉस्फोरिकम |
| 163. नैट्रम सल्फयूरिकम | 164. नाईट्रिक एसिडम |
| 165. नक्स मौस्चेटा | 166. नक्स वोमिका |
| 167. औन्समौडियम | 168. ओपियम |
| 169. औक्सैलिक एसिडम | 170. पैसिफलोरा इनकारनटा |
| 171. पेट्रौलियम | 172. फॉस्फोरिक एसिडम |
| 173. पासफोरस | 174. पायसोसटिग्मा |
| 175. पिकरीकम एसिडम | 176. पोडोफायलम |
| 177. प्लाटिना | 178. प्लमबम मेट |
| 179. पोडोफायलम | 180. सोरिनम |
| 181. पल्सटीला | 182. पायरोजेनियम |
| 183. रेडियम ब्रोमाइड | 184. रननकुलश बल्बोसस |
| 185. रपहैनस | 186. रतनहिया |
| 187. रेहम | 188. रौडोडेन्ड्रान |
| 189. रॉस ट्राक्सिकोडेन्ड्रान | 190. रुमेक्स |
| 191. रुटा जी | 192. सबडीला |
| 193. सबल सेरुलता | 194. सबीना |
| 195. समबुकस नीगरा | 196. संगुनारिया कैन |
| 197. सनीकूला | 198. सरसापारेला |
| 199. स्केल कॉरन्यूटम | 200. सेलेनियम |
| 201. शीपिया | 202. सिलिसिया |
| 203. स्पाईगिलीया | 204. स्कर्यीला |
| 205. स्टेनम मेट | 206. स्टेफीसागरिया |
| 207. स्ट्रेमोनियम | 208. स्पोगिया टोस्टा |
| 209. स्टीक्टा पल्मोनलिज | 210. सल्फर |
| 211. सल्फयूरिकम एसिडम | 212. सिंफिटम |
| 213. साईफिलीनम | 214. साइजियम जंबोलेनम् |
| 215. टबाकम | 216. टेरेन्दुला क्यूबेंसिस |
| 217. टराक्सिकम | 218. टेरीबिनथिना |
| 219. थेरेडियन | 220. थलेप्सी बरसा पैस्टोरिस |
| 221. थुजा ओसिडेन्टेलिस | 222. थाइरोडिनम |
| 223. थ्रीलियम पेंडुलम | 224. ट्यूबरकुलिनम |
| 225. युर्टिका युरेंस | 226. यूस्तीलैगो |
| 227. वेसिनिनम | 228. वैलेरियाना |
| 229. वेरियोलिनम | 230. वैरेट्रम अल्ब |
| 231. वेरेट्रम विरीडे | 232. विबर्नम ओपुलस |
| 233. विनिया माइनर | 234. वायपेरा |
| 235. एक्स-रे | 236. जिंकम् मेट |

**CENTRAL COUNCIL OF HOMOEOPATHY**
**NOTIFICATION**
New Delhi, the 28 December, 2001

No. F. 12-5/2000-CCH.:— -In exercise of the powers conferred by clause (i), (j) and (k) of section 33 and section 20 of the Homoeopathy Central Council Act, 1973 (59 of 1973), the Central Council of Homoeopathy, with the previous sanction of the Central Government, hereby makes the following regulations to further amend the Homoeopathy (Graded Degree Course) Regulations, 1983, namely:-

1. **Short title and Commencement**.- (1) These regulations may be called the Homoeopathy (Graded Degree Course) Amendments Regulations, 2001.

   (2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2. In the Homoeopathy (Graded Degree Course) Regulations, 1983( herein after referred to as the principal regulations), for regulation 5 , the following regulation shall be substituted, namely:-

   " **5. Subjects** .- Subjects for study and examination of the B.H.M.S (Graded Degree) Course shall be as under:-

   (i) Practice of Homoeopathic medicine including Paediatrics, Preventive and Social Medicine, Surgery, Obstetrics and Gynaecology, and Systemic Pathology

(ii) Homoeopathic Materia Medica (Applied and pure);

(iii) Organon of Medicine, Homoeopathic Philosophy, Chronic diseases, Psychology and Logic and Repertorisation".

3. For regulation 6 of the principal regulations, the following regulation shall be substituted, namely:-

"**6. Syllabus for Graded Degree Course**:- The following shall be the syllabus for the B.H.M.S (Graded Degree) Course, namely:-

I. Practice of Homoeopathic Medicine:- Homoeopathy has a distinct approach to diseases. It recognises disease neither by prominent symptoms nor by those of any organ or part of the body. It treats the patient as a whole and the totality of symptoms exhibited by him represents the disease. Merely the name of the condition from which he suffers is thus of no significance to a Homoeopath. Therefore, in the Graded Degree Course, the subject of Practice of Homoeopathic Medicine including Paediatrics, Preventive and Social Medicine, Surgery, Obstetics and Gyneacology and Systemic Pathology has been introduced on an integrated manner.

Medicine is essentially a practical science with stress on systematic disease diagnostic pattern of case taking whereas Homoeopathic Medicine has a variation with stress on constitution, liking/disliking, thermal reaction, mental set up (including behaviour) focussing individualisation besides, systematic disease diagnosis. Therefore, practice of Homoeopathic Medicine becomes practical. Therefore the teaching and training at the bed-side approach is introduced to inculcate such practical aspects in the mind of the students, to prepare them true

Homoeopaths. The following is the course of study for Practice of Homoeopathic Medicine:

A course of systematic instructions on the Principles and Practice of Homoeopathic Medicine inclusive of therapeutic prescribing.

The instructions may be given in following manner during 1-1/2 years of clinical course in Practice of Homoeopathic Medicine:

(A) A course of General and Systemic Pathology;

(B) A course of Preventive and Social Medicine which includes communicable diseases, its prevention, environmental medicine and Family Welfare;

(C) Paediatrics: The emphasis should be laid on growth and development of child and common diseases of children;

(D) Surgery: A large number of conditions are amenable to internal medication in Homoeopathy. The scope of Homoeopathy is much wider in the case with surgical dimensions but as supplement to medicine. Surgery has definite place in Homoeopathy and should be taught accordingly with that orientation.

Therefore, a course of instructions on the principles of surgery shall be-

(a) Practical instructions in surgical methods including Physiotherapy;

(b) Practical instructions in minor operative surgery;

(c) Lectures and demonstrations on radiology;

(d) Venereal diseases;

(e) Orthopaedics;

(f) Dental Diseases;

(g) Surgical diseases of children;

(h) Neurosurgery;

(i) E.N.T.

(j) Opthalmology.

Lectures and demonstration on surgical appliances and methods of Physiotherapy.

Instructions in these branches of medicine should be directed to the attainment of sufficient knowledge to ensure familiarity with the common conditions, their recognition and homoeopathic treatment.

(E) Obstetrics and Gynaecology: Students must be trained in special clinical methods of investigation for diagnosis local conditions and discriminating cases where surgical intervention, either as a life saving measure or for removing mechanical obstacles is necessary. In this context Homoeopathy adopts the same attitude towards medicine and surgery.

A course of systematic instructions on the principles and practice of Obstetrics and Gynecology and Infant Hygiene with therapeutic prescribing should be given. Throughout the whole period of study, students should be directed towards the importance of diagnosis, prevention and management aspect of the conditions. The instructions in this branch of medicine should be directed to the attainment of sufficient knowledge to ensure familiarity with common conditions, recognition and treatment.

In addition to the subjects mentioned above, instructions in clinical medicine may be given on the diseases of different body systems including common diseases of skin.

(F). Homoeopathic Materia Medica.

(a) Homoeopathic Materia Medica: a) Homeopathic Materia Medica is differently constructed as compared to other Materia Medicas. Homoeopathy considers that study of the action of drugs on individual parts or system of the body or on animals or isolate organs is only

a partial study of life processes under such action and that it does not lead us to full appreciation of the action of the medicinal agent; the drug agent as a whole is lost sight of.

(b) Essential and complete knowledge of the drug action as a whole can be supplied only by qualitative synoptic drug experiments on healthy persons and this alone can make it possible to view all the scattered data in relation to the psychosomatic whole of a person; and it is just such a person as a whole to the knowledge of drug action is to be applied.

(c) The Homoeopathic Materia Medica consists of a schematic arrangement of symptoms produced by each drug, incorporating no theories or explanations about their interpretation or inter-relationship. Each drug should be studied synthetically, analytically and comparatively, and this alone would enable a homeopathic student to study each drug individually and as a whole and help him to be a good prescriber.

(d) Polychrests and the most commonly indicated drugs for everyday ailments should be taken up first so that in the clinical classes or outdoor duties the students become familiar with their applications. They should be thoroughly dealt with explaining all comparisons and relationship Students should be conversant with their sphere of action and family relationship.

The less common and rare drugs should be taught in outline, emphasizing only their most salient features and symptoms. Rarer drugs should be dealt with later.

(e) Tutorials must be introduced so that students in small numbers can be in close touch with teachers and can be helped to study and understand Materia Medica in relation to its application in the treatment of the sick.

(f) While teaching therapeutics an attempt should be made to recall the Materia Medica so that indications for drugs in a clinical conditions can directly flow out from the provings' of the drugs concerned. The student should be encouraged to apply the resources of the vast Materia Medica in any sickness and not limit himself to memories a few drugs for a particular disease. This Hahnemannian approach will not only help him in understanding the proper perspective of symptoms as applied and their curative value in sickness but will even lighten his burden as far as formal examinations are concerned. Otherwise the present trend produces the allopathic approach to treatment of diseases and is contradictory to the teaching of Organon.

Application of Materia Medica should be demonstrated from cases in the outdoor and hospital wards.

Lectures on comparative Materia Medica and therapeutics as well as tutorials should be as far as possible be integrated with lectures on clinical medicine in the various departments.

(g) For the teaching of drugs the college should keep herbarium sheets and other specimens for demonstration to the students Lectures should be made interesting and slides of plants and materials may be projected

(h) (I) Introductory lectures:

Teaching of the Homeopathic Materia Medica should include:

(i) Nature and scope of Homoeopathic Materia Medica,

(ii) Sources of Homoeopathic Materia Medica, and

(iii) Different ways of studying the Materia Medica.

(II) The drugs to be taught under the following heads

(i) Common name, natural order, habitat, part used, preparation.

(ii) Sources of drug proving.

(iii) Symptomatisation of the drug emphasizing the characteristics, symptoms and modalities.

(iv) Comparative study of drugs.

(v) Complementary, inimical, antidotal and concordant remedies

(vi) Therapeutic application (Applied Materia Medica).

(III) A study of 12 tissue remedies according to Schussler's biochemic system of medicine.

The list of drugs to be taught in BHMS (Graded Degree Course) are as per Appendix.

(G.) Organon and Principles of Homoeopathic Philosophy: Hahnemann's Organon of Medicine is the high water mark of medical philosophy. It is an original contribution in the field of medicine in a codified form. A study of the Organon as well as of the history of Homoeopathy and its founder's life story will show that Homoeopathy is a product of application of the inductive logical method of reasoning to the solution of one of the greatest problems of humanity namely the treatment and cure of the sick. A thorough acquaintance with the fundamental principles of logic, both deductive and inductive, is therefore essential. The Organon should accordingly be taught in

such a manner as to make clear to the students the implications of the logical principles by which Homoeopathy was worked out and built up and with which a Homoeopathic physician has to conduct his daily work with ease and facility in treating every concrete individual case.

The practical portions should be thoroughly understood and remembered for guidance in practical work as a physician.

1. Introductory lectures- 10 hours.

**Subjects:**

(a) What is Homoeopathy?

It is not merely a special form of therapeutics, but a complete system of medicine with its distinct approach to life, health, disease, remedy and cure. Its holistic, individualistic and dynamistic approach to life, health, disease , remedy and cure. It is out and out logical and objective basis of approach. Homoeopathy is nothing but an objective and rational system of medicine. Homoeopathy is thoroughly scientific in its approach and methods. It is based on observed facts and data on inductive and deductive logic inseparably related with observed facts and data.

(b) Distinct approach of Homoeopathy to all the preclinical, clinical, and para-clinical subjects,

(c) Preliminary idea about all the pre-clinical,

(d) Hahnemann's organon 5th and 6th Editions-Aphorism 1 to 294,

(e) Homoeopathic Philosophy (i) Kent's lectures in Homoeopathic Philosophy (ii) Stuart close-Lectures and Essays on Homoeopathic Philosophy (The Genius of Homoeopathy) (iii) H. Roberts' Art of cure by Homoeopathy (iv) Dunhum's Science of Therapeutics,

(f) During the lectures on Homoeopathic Philosophy, the following items should be elucidated,

(i) The scope of Homoeopathy,

(ii) The logic of Homoeopathy,

(iii) Life, Health, Disease and Indisposition,

(iv) Susceptibility, Reaction and Immunity,

(v) General philosophy of Homoeopathic theory of acute and chronic miasma,

(vi) Homoeopathic posology,

(vii) Potentisation and the Infinitesimal dose and the drug potency,

(viii) Examination of the patient from the homeopathic point of view,

(ix) Significance and implications of totality of symptoms,

(x) The value of symptoms,

(xi) The homeopathic aggravation,

(xii) Prognosis after observing the action of the remedy,

(xiii) The second prescription,

(xiv) Difficult and incurable cases-Palliation.

(g) Introduction to organon (5th and 6th Editions),

(h) History of Homoeopathic Medicine - Medicine as it existed during Hahnemann's time, early life of Hahnemann; his disgust with the existing system of treatment; his discovery of the law of similars; History of the late life of Hahnemann: Introduction of Homoeopathy in various countries; Pioneers of Homoeopathy and their contributions.

Development of Homoeopathy upto the present day. The present trends in the development of Homoeopathy. Influence of Homoeopathy on other systems of medicine.

(i) Hahnemann's Chronic Diseases,

(j) A. Lecture on doctrinal part (Aphorisms 1-70) topic-wise discussion):

(i)Aim of physician and highest ideal of cure Aph. 1 and 2,

(ii)Knowledge of physician-Aph. 3 and 4,

(iii)Knowledge of disease which supplies the indication - Aph. 5 to 19,

(iv)Knowledge of medicines - Aph. 19 to 21,

(v)Evaluation of Homoeopathic method from other methods of treatment Aph. 22 to 69,

(vi)Summary-three conditions for cure- Aph. 70.

B. Lectures on practical part of organon is to be divided into and taught under the following subjects:-

(a) What is necessary to be known in order to cure the disease and case taking methods. Aph. - 70 to 104.

(b) The pathogenetic powers of medicine, i.e. drug proving or how to acquire knowledge of medicine Aph. 105 - 145.

(c) How to choose the right medicine - Aph. 147, 148, 149, 150, 153, 155.

(d) The right dose-Aph. 185, 186, 187, 189, 190, 191, 196, 197, 199, 201, 202, and 203.

(e) Chronic disease - Aph. 204, 206, and 208.

(f) Mental disease - Aph. 210-230.

(g) Intermittent disease - Aph. 231, 232, 236, 237, 238, 240, 241, 242.

(h) Diet, regimen and the modes of employing medicine Aph. 245, 246, 247, 248, 252, 253, 257, 259, 262, 263, 269, 270, 271, 273, 275, 276, 278, 280, 286, 289, 290, and 291.

C. Clinical lectures on both in and out patient departments. Examination of the patient from Homoeopathic point of view:

(a) Disease determination

(b) Disease individualisation

(c) Evaluation of symptoms. ] The value of symptoms.

(d) Gradation of symptoms ]

(e) Selection of medicine and potency and repetition of dose.

(f) Disease aggravation or Homoeopathic aggravation.

(g) Miasmatic diagnosis.

(h) Second prescription.

(i) Prognosis after observing the action of the remedy.

(H). Psychology

Introduction to normal psychology:

(a) Definition of Psychology as a science and its difference from other sciences.

(b) Conception of the mind.

(c) Mesmar and his theory, Hypnotism structure of conscious, Development of Libide

(d) Fraud and his theory-Dynamics of the unconsciousness.

(e) Other contemporary schools of Psychology

(f) Relation between mind body in health and disease

(g) Perception, Imagination, Ideation, Intelligence

(h) Cognition, Conation, Affect, Instinct, Sentiment, Behaviours.

(I) Homoeopathic Repertory: Homoeopathic Materia Medica is an encyclopedia of symptoms. No mind can memorize all the symptoms of all the drugs together with their characteristic gradation. The Repertory is an index, a catalogue of the symptoms of the Materia Medica, neatly arranged in a practical form, and also indicating the relative gradation of drugs, and it greatly, facilitates quick selection of the indicated remedy. It is impossible to practice Homoeopathy without the aid of Repertories, and the best repertory is that fullest.

It is possible to obtain the needed correspondence between drugs and disease conditions in a vareity of ways and degrees, and there are therefore different types of repertories, each with its own distinctive advantage in finding the similimum.

Case Taking: Difficulties of taking a chronic case. Recording of case and usefulness of record keeping

Totality of symptoms, prescribing symptoms; uncommon, peculiar and characteristic symptoms, general and particular symptoms; eliminating symptoms analysis of the case, uncommon and common symptoms, gradation and evaluation of symptoms.; importance of mental symptoms, kinds and sources of general symptoms.

(a) History of Repertories

(b) Types of Repertories

(c) Demonstration of three cases worked on Boenninghausen

(d) Kent's Repertory - advanced study with case demonstration

(e) Boger Boenninghausen Repertory - his contribution to repertory

(f) Card Repertory with demonstration of five cases, limitation and advantages of Card repertories, theoretical lectures with demonstrations.

PRACTICAL: Students are to repertorise:

(i) 15 short cases on Kent,

(ii) 10 Chronic (Long cases on Kent)

(iii) 5 Cases to be cross checked.

4. In regulation 7 of the principal regulations,-

" (i) sub-regulation (i) shall be numbered as sub-regulation (1), and;

(ii) sub-regulations (ii) to (ix), the following sub-regulations shall be substituted, namely:-

(2) The B.H.M.S. Graded Degree examination shall be divided into two Parts- Part-I and Part-II. The examination in Part-I shall be held at the end of six months and Part-II at the end of eighteen months.

(3) Candidate must clear all papers of Part-I examination at-least six months before appearing in the papers of Part-II examination.

Provided the candidates enrolled in B.H.M.S. Graded examinations under proviso of clause (a) and under clause (b) of sub-regulation (i.) of regulation 7 of principal Regulations shall have an option to take the examinations in Part -I & Part-II jointly at the end of 18 months.

(4) All the three major subjects shall be divided into Part-I and Part-II examinations.

(5) The examinations shall consist of theoretical papers and practical/clinical including oral examinations.

(6) Pass marks in all the subjects, both Homoeopathic and Allied subjects shall be 50% in written and 50% in practical, including oral."

(7) A candidate who obtains atleast 75% marks or above in aggregate in all subjects shall be deemed to have passed the examination with honours, provided that he has passed the examination in first attempt.

PART I

(a) The examination in practice of Homoeopathic Medicine shall consist of two written papers and an oral including clinical examination.

The written paper I shall cover the following subjects;

Preventive and Social medicine including General and Systemic Pathology.

The written paper II shall cover the following subjects in two sections:

Section 1: Clinical features of Obstetrics and Gynaecology including Paediatrics.

Section 2: Homoeopathic Therapeutics.

(b) The examination in Materia Medica shall consist of one written paper and one practical examination. The written paper shall be divided into two sections:-

Section 1: Drugs from the list of Drugs in Appendix.

Section 2: Comparative Materia Medica and applied Materia Medica.

(c) The examination in Organon of Medicine shall consist of one written paper and one practical including oral examination. The written papers shall cover Aphorism 1-294, Psychology and Logic, with question on Repertory and Case taking.

(8) Full marks for each subject and minimum number of marks required for passing shall be as follows:-

| | Subject | Written | | Oral(including practical) | | Total | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Full | Pass | Full | Pass | Full | Pass |
| 1. | Practice of Homoeopathic Medicine (including Preventive and Social Medicine, Pathology, Obstetrics and Gynacology and Paediatics) | 200 | 100 | 100 | 50 | 300 | 150 |
| 2. | Materia Medica | 100 | 50 | 100 | 50 | 200 | 100 |
| 3. | Organon of Medicine, Homoeopathic Philosophy including Psychology and logic | 100 | 50 | 100 | 50 | 200 | 100 |

(9) Marks for oral including practical for each subject shall be divided as under:

(a) Practice of Homoeopathic Medicine:

| | |
|---|---|
| Macro-scopic and Microscopic spotting of specimens | - 40 Marks |
| Case presentation of Gynaecology and Obstetrics | - 25 Marks |
| Oral | - 25 Marks |
| Journal | - 10 Marks |

(b) Materia Medica:

| | |
|---|---|
| Case presentation with reports | - 50 Marks |
| Oral | -40Marks |
| Journal | - 10 Marks |

(c) Organon of Medicine:

| | |
|---|---|
| Case presentation with analysis and evaluation | - 30 Marks |
| Repertorisation | - 30 Marks |
| Oral | - 30 Marks |
| Journal | - 10 Marks |

PART II

(a) The examination in Practice of Homoeopathic Medicine shall consist of two written papers and one practical/clinical including oral examination. The written paper I shall cover the following into two sections:-

Section 1 : Practice of Medicine.

Section 2 : Homoeopathic Therapeutics.

The written paper II shall cover the following in two sections:-

Section 1: Surgery with Gynaecology, ENT, Orthopaedics, Dentistry.

Section 2: Homoeopathic Therapeutics

(b) The examination in Materia Medica shall consist of one written paper and one practical paper. The written paper shall be divided into two sections:

Section 1 : Drugs from the list of drugs in Appendix.

Section 2 : Comparative Materia Medica and Applied Materia Medica.

(c) The examination in Organon of Medicine and Homoeopathic Philosophy shall consist of one written paper and one oral including bed-side clinical examination. The written paper shall consist of the following two sections:

Section 1 : Homoeopathic Philosophy, concept of Homoeopathic Art of cure with reference to Kent, Robert, Stuart Close and others.

Section 2 : Detailed fundamental causes of diseases i.e. miasma, theory of its logical interpretations as applied in practice.

(10) Full marks for each subject and minimum number of marks required for passing shall be as follows:-

| | Subject | Written | | Oral, including practical | | Total | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Full | Pass | Full | Pass | Full | Pass |
| 1. | Practice of Homoeopathic Medicine including Surgery (with Homoeopathic therapeutics) | 200 | 100 | 100 | 50 | 300 | 150 |
| 2. | Materia Medica | 100 | 50 | 100 | 50 | 200 | 100 |
| 3. | Organon of Medicine, Homoeopathic Philosophy. | 100 | 50 | 100 | 50 | 200 | 100 |

(11) Full marks for oral including practical for each subject shall be divided as under:-

| | |
|---|---|
| Practice of Homoeopathic Medicine: | -100 Marks |
| One long case with Homoeopathic management | - 30 Marks |
| One short case of Surgery with Homoeopathic management | - 20 Marks |
| Oral including X- rays, instruments and specimens | - 50 Marks |
| | |
| Materia Medica: | - 100 Marks |
| Case Presentation with regards to Homoeopathic remedies | - 50 Marks |
| Oral | -40Marks |
| Journal | - 10 Marks |
| | |
| Organon of Medicine: | - 100 Marks |
| Case Presentation with disease determination, second prescription | - 50 Marks |
| Oral | - 50 Marks" |

(12) Results of Part II shall be declared if a candidate takes the examination in both the Parts I and II jointly and unless he has passed Part I examination.

5. For regulation 8 of the principal regulations, the following regulation shall be substituted, namely:-

"8.**Results and readmission to examination**- (1)There shall not be more than two examinations in an year with an interval of four to six months between the examinations.

(2)All the examinations shall ordinarily be held on such dates., time and place as the examining body may determine.

(3)Every candidate for admission to an examination shall, at least 21 days before the date fixed for the commencement of the examination, send to the authority concerned his application in the prescribed form along with the examination fee.

(4)The examining body shall as soon as may be after the examination publish a list of successful candidates.

(5)Every candidate shall, on passing the examination, receive a certificate in the form prescribed by the examining body concerned.

(6)If a candidate fails to pass in all the subjects within the prescribed four chances, he shall be required to prosecute a further course of study in all the subjects of and in all parts for one year to the satisfaction of the head of the college and appear for examination in all the subjects.

Provided that if a student appearing for Part-II BHMS examination has only one subject to pass at the end of prescribed chances, he shall be allowed to appear at the next examination in the particular subject and shall complete the examination with this special chance.

(7)The examining body may, under exceptional circumstances partially or wholly cancel any examination conducted by it under intimation to the Central Council of Homoeopathy and arrange for conducting the re-

examination in those subjects within a period of thirty days from the date of such cancellation.

(8)Grace marks shall be awarded to the students only on exceptional circumstances on a general principle and norm fixed by the examining body from time to time".

Dr LALIT VERMA Registrar-cum-Secy.

[ADVT III/IV/147/2001/Exty.]

**Foot Note** :—Principal regulations were published in the Gazette of India Extraordinary, Part III, Section 4, vide No 7-1/83-CCH dated 11th May, 1983 and subsequent corrigendum vide No. 7-1/83-CCH dated 6th February, 1984

## LIST OF DRUGS

APPENDIX

| | |
|---|---|
| 1. Abies canadensis | 2. Abies niagra |
| 3. Abrotanum | 4. Acalypha indica |
| 5. Acetic acidum | 6. Aconite nap |
| 7. Actea recemosa | 8. Actea spicata |
| 9. Aethusa cynapium | 10.Aesculus hippocastanum |
| 11.Adonis vernalis | 12.Adrenaline |
| 13.Agaricus muscarious | 14.Agnus castus |
| 15.Allium cepa | 16.Aloes soc |
| 17.Alumina | 18.Ambra grisea |
| 19.Ammonium carb | 20.Ammonium mur |
| 21.Anacardium | 22.Anthracinum |
| 23.Antimonium arsenicosum | 24.Antimonium crudum |
| 25.Antimonium tart | 26.Apocynum cannabinum |
| 27.Apis mel | 28.Argentum metallicum |
| 29.Argentum nitricum | 30.Arnica montana |
| 31.Arsenicum album | 32.Arsenic iodatum |
| 33.Arum triphyllum | 34.Artemesia vulgaris |
| 35.Asafoetida | 36.Asterias rubens |
| 37.Aurum metallicum | 38.Avena sativa |
| 39.Bacillinum | 40.Baptisia |
| 41.Baryta carbonicum | 42.Baryta mur |
| 43.Baryta mur | 44.Belladonna |
| 45.Bellis perennis | 46.Benzoicum acidum |
| 47.Berberis vulgaris | 48.Bismuthum |
| 49.Blatta orientalis | 50.Borax |
| 51.Bovista | 52.Bromium |
| 53.Bryonia alba | 54.Bufo rana |
| 55.Cactus grandiflous | 56.Caladium |
| 57.Calcarea ars | 58.Calcarea carb |
| 59.Calcarea flour | 60.Calcarea phos |
| 61.Calcarea sulph | 62.Claendula officianalis |
| 63.Camphora | 64.Canabis indica |
| 65.Canabis sativa | 66.Cantharis |
| 67.Capsicum | 68.Carbolicum acidum |
| 69.Carbo veg | 70.Cardus marianus |
| 71.Carcinocin | 72.Caulophyllum |
| 73.Causticum | 74.Ceanonthus |
| 75.Cedron simaruba ferroginea | 76.Chamomilla |
| 77.Chelidonium maj | 78.China officinalis |

| | |
|---|---|
| 79.Chininum ars | 80.Cholesterinum |
| 81. Cicuta virosa | 82. Cina |
| 83.Clematis erecta | 84.Coca |
| 85.Cocculus indica | 86.Coffea cruda |
| 87.Colchicum | 88.Collinsonia canadensis |
| 89.Colocynthis | 90.Condurango |
| 91.Conium mac | 92.Corallium |
| 93.Crataegus oxy | 94.Crocus sativa |
| 95. Crotalus horridus | 96.Croton tig |
| 97. Cuprum ars | 98.Cuprum metallicum |
| 99. Cyclamen | 100. Dioscorea villosa |
| 101. Digitalis | 102. Diphtherinum |
| 103. Drosera | 104. Dulcamera |
| 105. Equisetum | 106. Erigeron |
| 107. Eupatorium perfoliatum | 108. Euphrasia officinalis |
| 109. Ferrum mettalicum | 110. Ferrum phos |
| 111. Flouric acidum | 112. Gelsemium |
| 113. Glonoine | 114. Graphitis |
| 115. Hammamelis vir | 116. Hepar sulph |
| 117. Helleborus | 118. Helonius |
| 119. Hydrastis | 120. Hydrocotyle asiatica |
| 121. Hyoscyamus | 122. Ignatia amara |
| 123. Iodum | 124. Ipecacunaha |
| 125. Kali bichromicum | 126. Kali bromatum |
| 127. Kali carb | 128. Kali muriaticum |
| 129. Kali phosphoricum | 130. Kali sulphuricum |
| 131. Kalmia | 132. Kreosotum |
| 133. Lac caninum | 134. Lachesis |
| 135. Ledum pal | 136. Lilium tigrinum |
| 137. Lithium carb | 138. Lobelia inflata |
| 139. Lycopodium | 140. Lyssin |
| 141. Magnesia carbonica | 142. Magnesia muriatica |
| 143. Magnesia phosphorica | 144. Malandrinum |
| 145. Medorrihnum | 146. Melilotus |
| 147. Menyanthes | 148. Mephitis |
| 149. Mercurius corrosivus | 150. Mercurius cyanatus |
| 151. Mercurius dulcis | 152. Mercurius solibillis |
| 153. Mercurius Sulph | 154. Mezerium |
| 155. Millifolium | 156. Moschus |
| 157. Murex | 158. Muriatic acidum |
| 159. Naja tripudians | 160. Natrum carb |

| | |
|---|---|
| 161. Natrum muriaticum | 162. Natrum phosphoricum |
| 163. Natrum sulphuricum | 164. Nitric acidum |
| 165. Nux moschetta | 166. Nux vomica |
| 167. Onosmodium | 168. Opium |
| 169. Oxalic acidum | 170. Passiflora incarnata |
| 171. Petroleum | 172. Phosphoric acidum |
| 173. Phosphorus | 174. Physostigma |
| 175. Picricum acidum | 176. Podophyllum |
| 177. Platina | 178. Plumbum met |
| 179. Podophyllum | 180. Psorinum |
| 181. Pulsatilla | 182. Pyrogenium |
| 183. Radium bromide | 184. Rananculus bulbosus |
| 185. Raphanus | 186. Ratanhia |
| 187. Rehum | 188. Rhododendron |
| 189. Rhus toxicodendron | 190. Rumex |
| 191. Ruta G | 192. Sabadilla |
| 193. Sabal serullata | 194. Sabina |
| 195. Sambucus nigra | 196. Sangunaria can |
| 197. Sanicula | 198. Sarsaparilla |
| 199. Secale cornutum | 200. Selenium |
| 201. Sepia | 202. Silicea |
| 203. Spigelia | 204. Squilla |
| 205. Stanum met | 206. Staphisagria |
| 207. Stramonium | 208. Spongia tosta |
| 209. Sticta pulmonalis | 210. Sulphur |
| 211. Sulphuricum acidum | 212. Symphytum |
| 213. Syphilinum | 214. Syzygium jambolanum |
| 215. Tabacum | 216. Tarentula cubensis |
| 217. Taraxicum | 218. Teribinthina |
| 219. Theridion | 220. Thlapsi bursa pastoris |
| 221. Thuja occidentalis | 222. Thyroidinum |
| 223. Trillium pendulum | 224. Tuberculinum |
| 225. Urtica urens | 226. Ustilago |
| 227. Vaccininum | 228. Valeriana |
| 229. Variolinum | 230. Veratrum alb |
| 231. Veratrum viride | 232. Viburnum opulus |
| 233. Vinca minor | 234. Vipera |
| 235. X-Ray | 236. Zincum met |

Printed by the Manager, Govt. of India Press, Ring Road, Mayapuri, New Delhi-110064
and Published by the Controller of Publications, Delhi-110054